Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भूगोल

मानव भूगोल के मूल सिद्धान्त

अध्याय–4

प्राथमिक क्रियाएँ

भाग - 4

रामावतार यादव

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कृषि



रोपण कृषि



गहन श्रम

पशुचारण

चलवासी पशुचारण

वाणिज्य पशुधन पालन

स्थायी

उच्च

उपस्थाई

निम्न तकनीकी



डेरी कृषि





बागानी कृषि

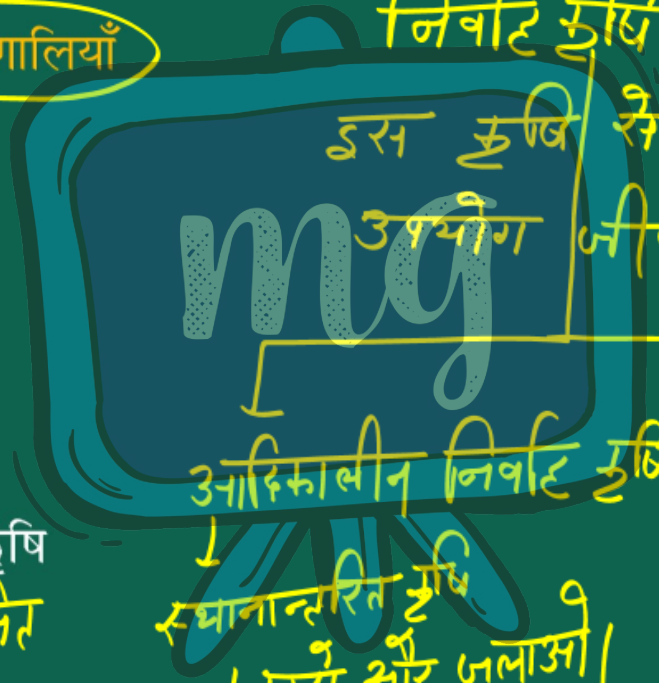


Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

विश्व की प्रमुख कृषि प्रणालियाँ

1. निर्वाह कृषि
2. आदिकालीन निर्वाह कृषि
3. गहन निर्वाह कृषि
4. रोपण कृषि
5. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
6. मिश्रित कृषि



निर्वाह कृषि → इस कृषि से उत्पादित उत्पाद का उपयोग जीवन निर्वाह के लिए किया।

आदिकालीन निर्वाह कृषि
- स्थानान्तरित कृषि
  - काटो और जलाओ।
  - उच्चतरमीदी

गहन निर्वाह कृषि
- चावल, गहन निर्वाह कृषि
  - उद्यान
- चावल रहित निर्वाह कृषि।

विकसित
- बड़े-2 कृषि

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

7. डेरी कृषि → दुग्ध उत्पादन → उच्च तकनीकी → गाय
8. भूमध्य सागरीय कृषि → यूरोप व अफ्रीका → फलों
9. उद्यान कृषि → सब्जी + फल / फूल
10. सहकारी कृषि → सहकारी संस्था
11. सामूहिक कृषि → समस्त समाज का उत्पादन के साधनों पर सामूहिक अधिकार होता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

निर्वाह कृषि

इस प्रकार की कृषि में कृषि क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय उत्पादों का संपूर्ण अथवा लगभग का उपयोग करते हैं।

निर्वाह कृषि के प्रकार

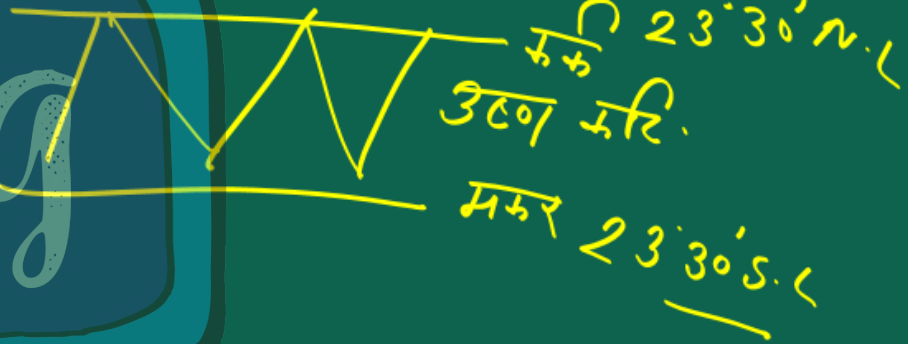
- आदिकालीन निर्वाह कृषि
- गहन निर्वाह कृषि

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आदिकालीन निर्वाह कृषि

- आदिकालीन निर्वाह कृषि अथवा स्थानांतरणशील कृषि कार्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में किया जाता है।

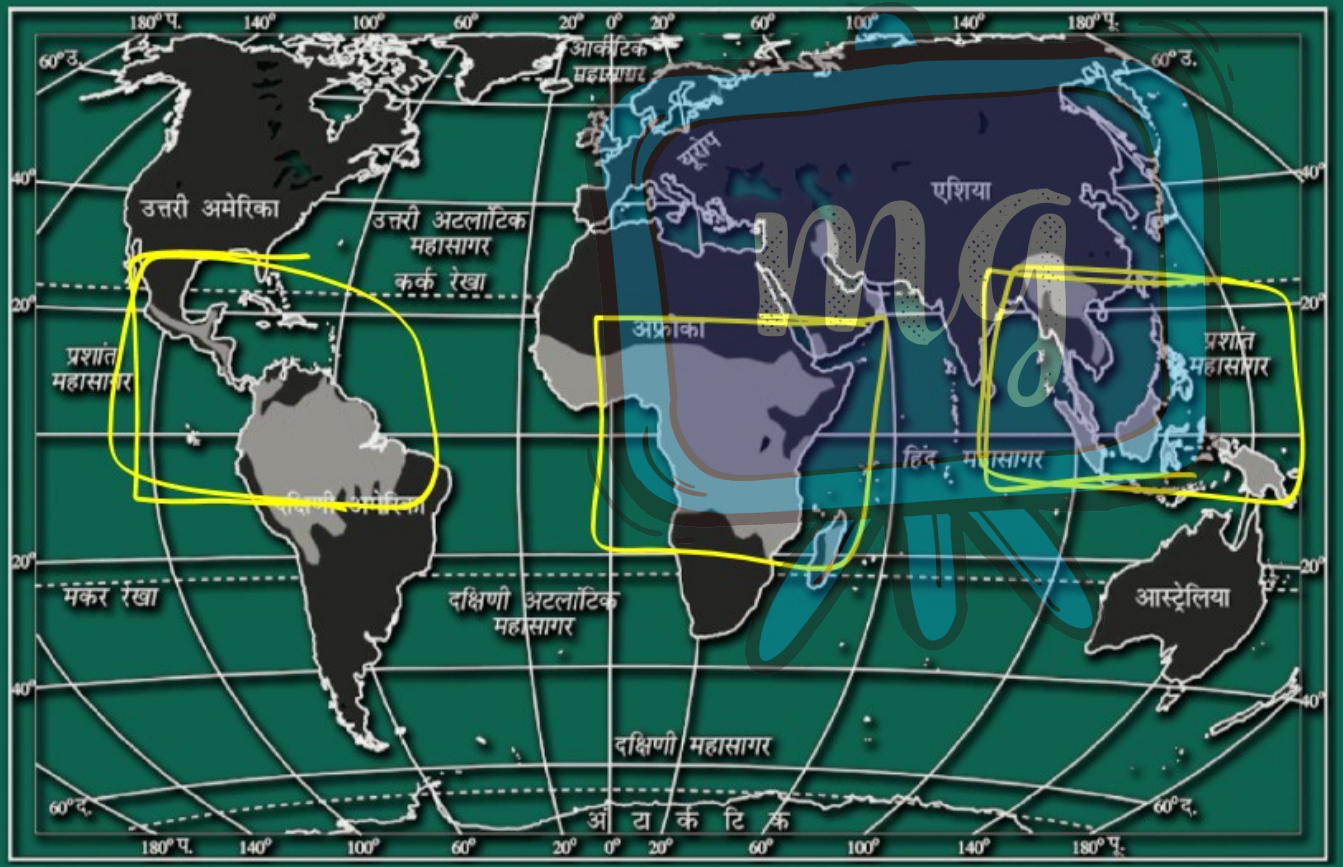


प्रमुख क्षेत्र

- अफ्रीका, दक्षिणी एवं मध्य अमेरिका का उष्णकटिबंधीय भाग एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रमुख विशेषताएँ



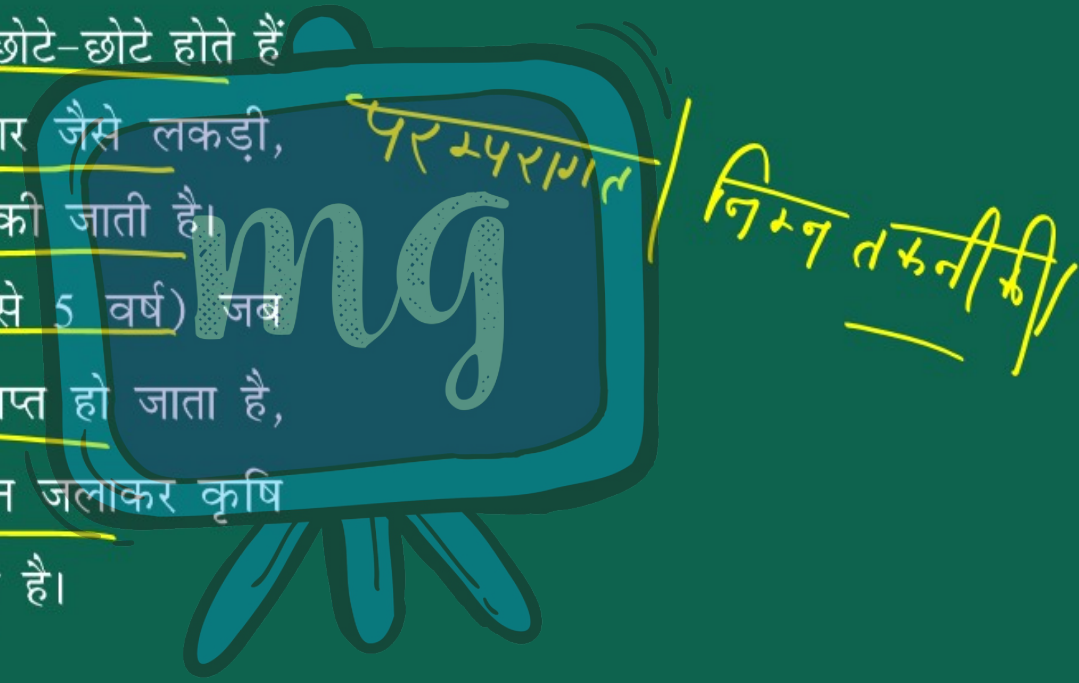


- सर्वप्रथम इन क्षेत्रों की वनस्पति को काटा जाता है फिर उसे जला दिया जाता है एवं जली हुई राख की परत उर्वरक का कार्य करती है।
- इस प्रकार स्थानांतरणशील कृषि कर्तन एवं दहन कृषि भी कहलाती है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

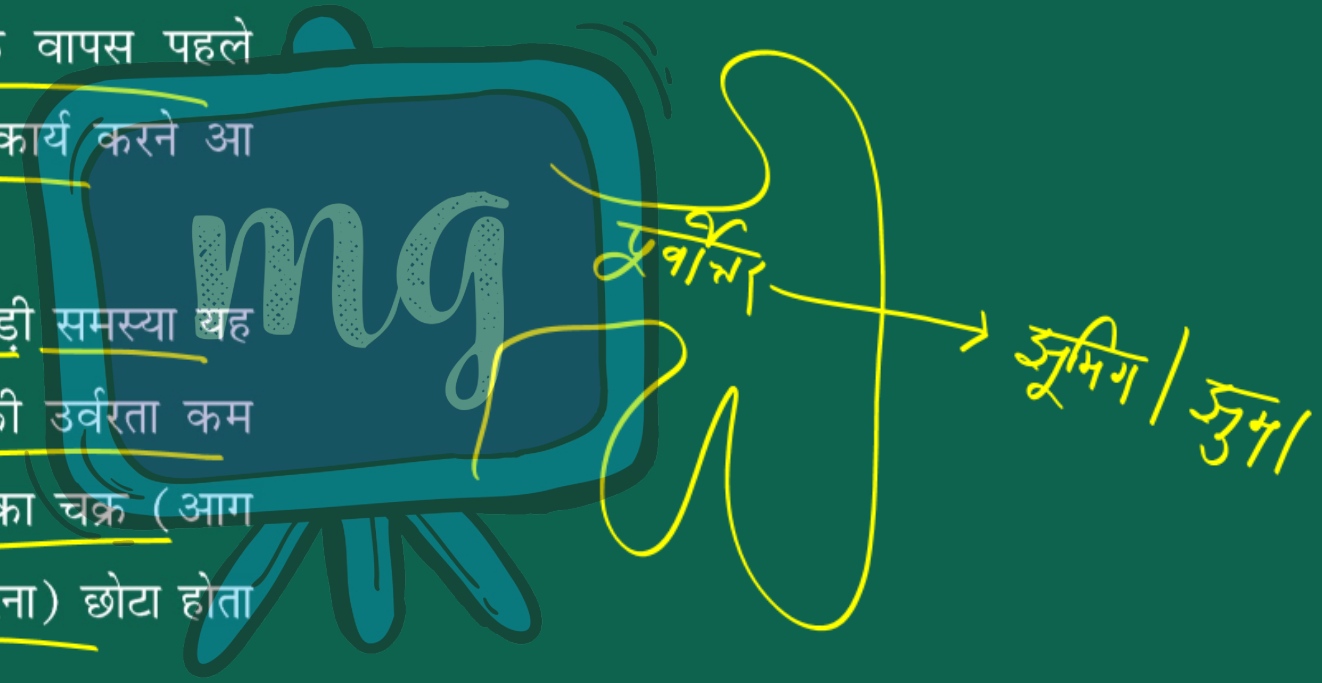
- इसमें बोए गए खेत बहुत छोटे-छोटे होते हैं एवं खेती भी पुराने औजार जैसे लकड़ी, कुदाली एवं फावड़े द्वारा की जाती है।
- कुछ समय पश्चात् (3 से 5 वर्ष) जब मिट्टी का उपजाऊपन समाप्त हो जाता है, तब कृषक नए क्षेत्र में वन जलाकर कृषि के लिए भूमि तैयार करता है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ समय पश्चात् कृषक वापस पहले वाले कृषि क्षेत्र पर कृषि कार्य करने आ जाता है।
- इस कृषि कार्य में सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस क्षेत्र में भूमि की उर्वरता कम होती जाती है जिससे झूम का चक्र (आग लगाकर कृषि क्षेत्र तैयार करना) छोटा होता जाता है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अनेक नाम

- भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों – झूमिंग
- मध्य अमेरिका एवं मैक्सिको – मिल्पा
- मलेशिया व इंडोनेशिया – लादांग
- वियतनाम – रे
- राजस्थान – वालरा



ब्राजील → रोमा

पैन्ना।

डंडा

लादांग

वहाड़ी

चिमात

मैदानी

दमिया

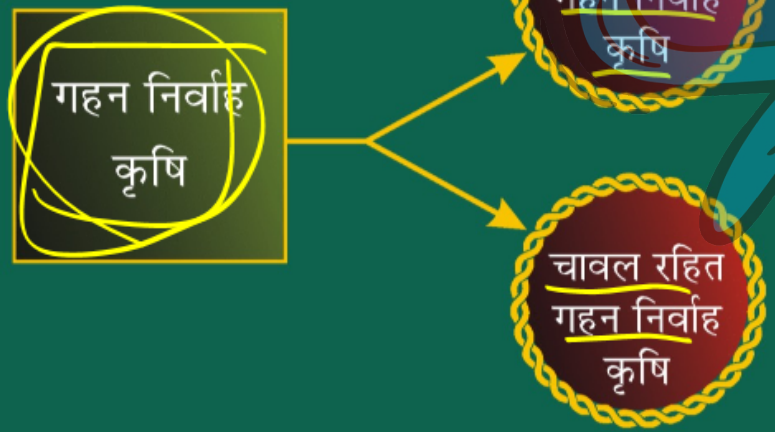
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

गहन निर्वाह कृषि

अरबी भाषा | → मौसमी पवनें

इस प्रकार की कृषि मानसून एशिया के घने बसे देशों में की जाती है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(i) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि

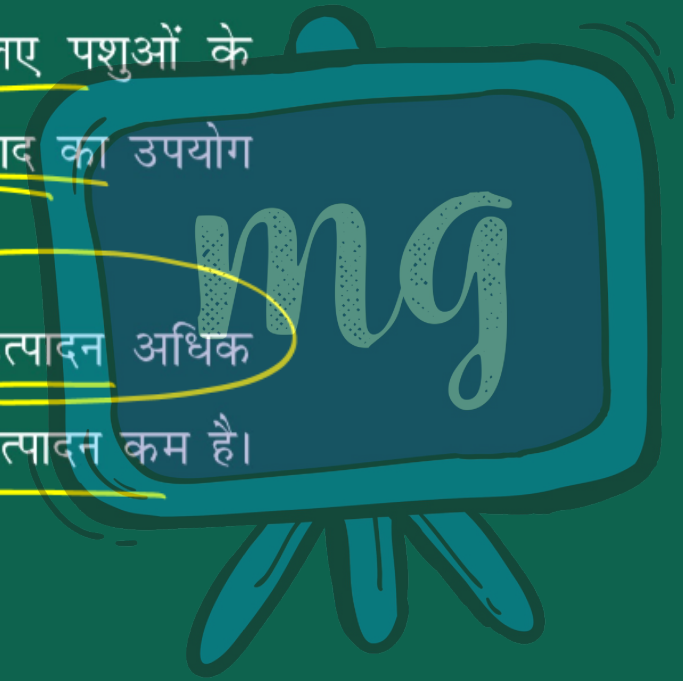
- इसमें चावल प्रमुख फसल होती है।
- अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण खेतों का आकार छोटा होता है एवं कृषि कार्य में कृषक का संपूर्ण परिवार लगा रहता है।
- भूमि का गहन उपयोग होता है एवं यंत्रों की अपेक्षा मानव श्रम का अधिक महत्त्व है।

→ जनसंख्या +
→ खेतों का आकार छोटा
→ मानव श्रम

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उर्वरता बनाए रखने के लिए पशुओं के गोबर की खाद एवं हरी खाद का उपयोग किया जाता है।
- इस कृषि में प्रति इकाई उत्पादन अधिक होता है, परंतु प्रति कृषक उत्पादन कम है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

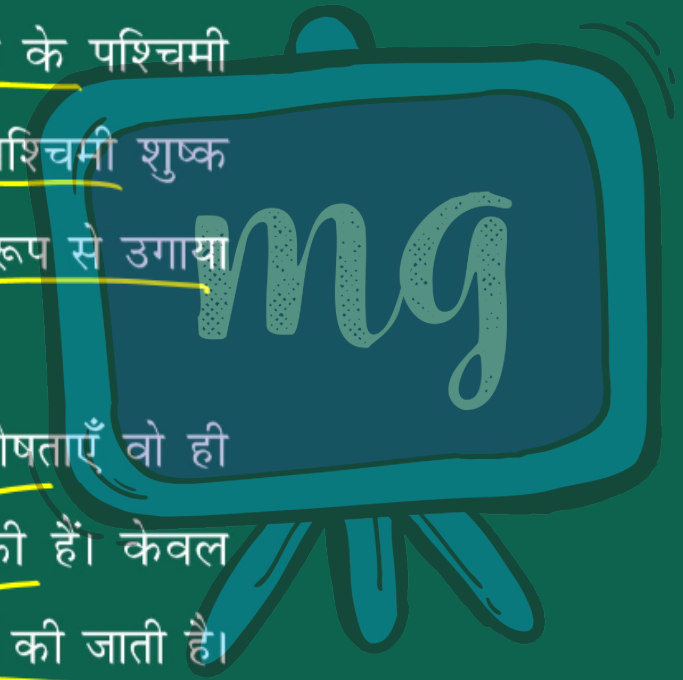


(ii) चावल रहित गहन निर्वाह कृषि:

- मानसून एशिया के अनेक भागों में उच्चावच, जलवायु, मृदा तथा अन्य भौगोलिक कारकों की भिन्नता के कारण धान की फसल उगाना प्रायः संभव नहीं है।
- उत्तरी चीन, मंचूरिया, उत्तरी कोरिया एवं उत्तरी जापान में गेहूँ, सोयाबीन, जौ आदि बोया जाता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

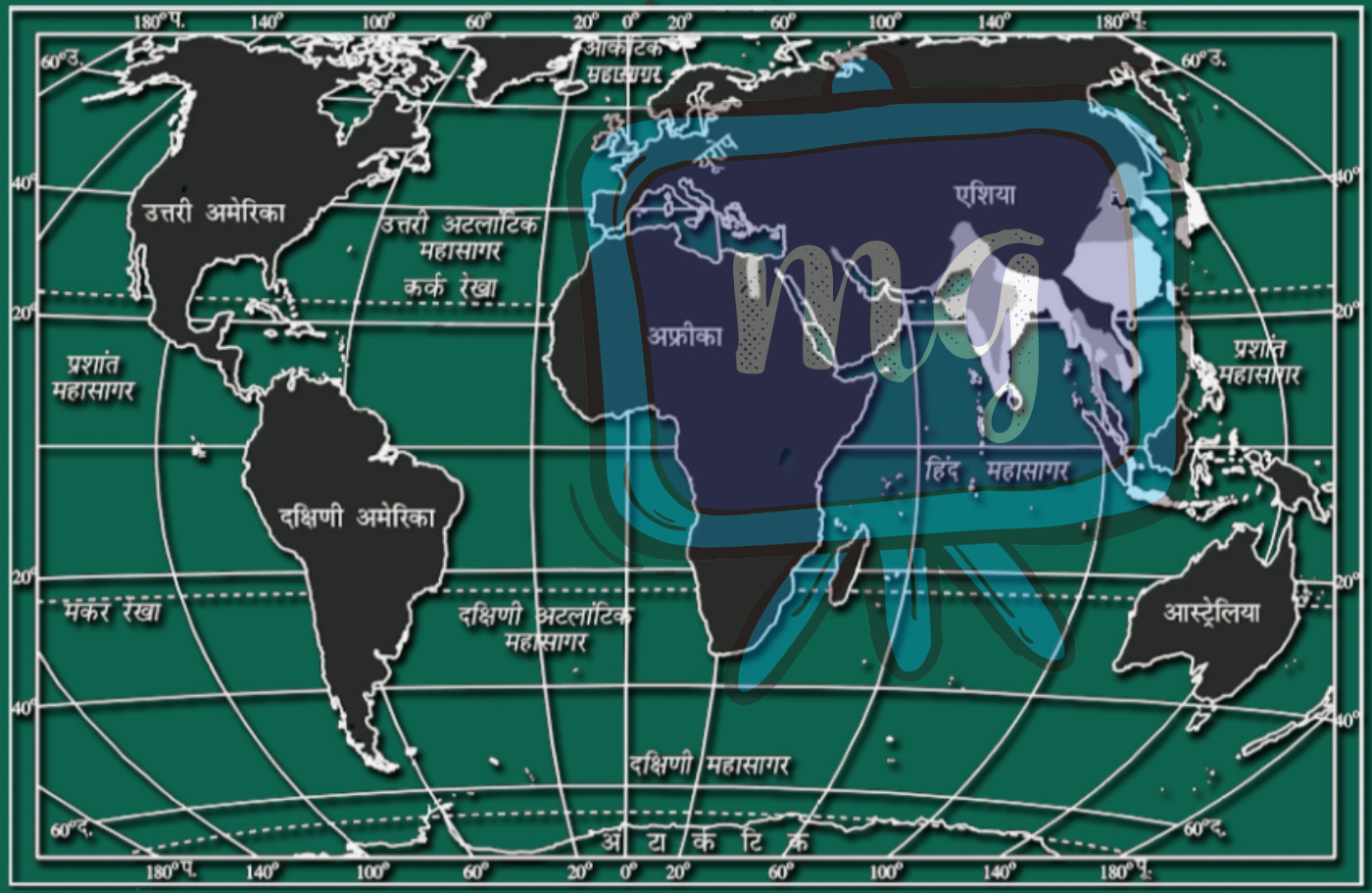
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- भारत में सिंध-गंगा के मैदान के पश्चिमी भाग में गेहूँ एवं दक्षिणी व पश्चिमी शुष्क प्रदेश में ज्वार-बाजरा प्रमुख रूप से उगाया जाता है।
- इस कृषि की अधिकतर विशेषताएँ वो ही है जो चावल प्रधान कृषि की हैं। केवल अंतर यह है कि इसमें सिंचाई की जाती है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

रोपण कृषि

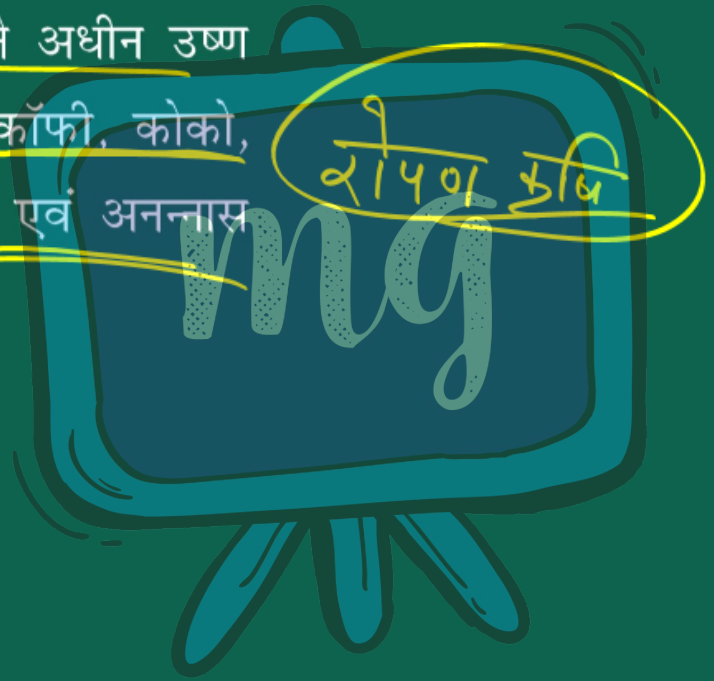
यूरोपीय लोगों ने विश्व के अनेक भागों का औपनिवेशीकरण किया तथा कृषि के कुछ अन्य रूपों की शुरुआत की जैसे रोपण कृषि, जो वृहद् स्तरीय लाभोन्मुख उत्पादन प्रणाली है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- यूरोपीय उपनिवेशों ने अपने अधीन उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में चाय, कॉफी, कोको, रबड़, कपास, गन्ना, केले एवं अनन्नास की पौध लगाई।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

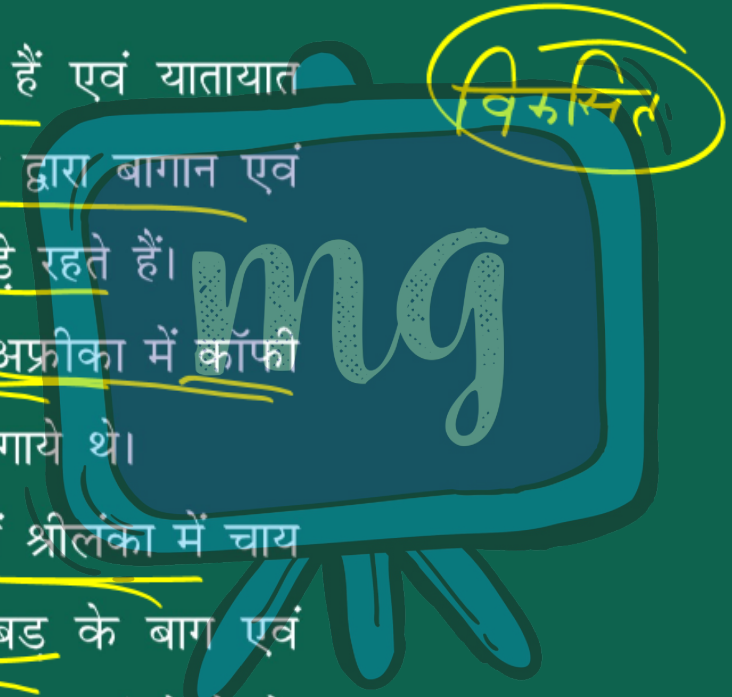
प्रमुख विशेषताएँ

- कृषि क्षेत्र का आकार बहुत विस्तृत होता है। → विस्तृत
- इसमें अधिक पूँजी निवेश, उच्च प्रबंध एवं तकनीकी आधार एवं वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। → उच्च तकनीकी → एक प्रकार की फसल
- यह एक फसली कृषि है जिसमें किसी एक फसल के उत्पादन पर ही सकेंद्रण किया जाता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- श्रमिक सस्ते मिल जाते हैं एवं यातायात विकसित होता है जिसके द्वारा बागान एवं बाज़ार सुचारु रूप से जुड़े रहते हैं।
- फ्रांसवासियों ने पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी एवं कोकोआ के पौधे लगाये थे।
- ब्रिटेनवासियों ने भारत एवं श्रीलंका में चाय के बाग, मलेशिया में रबड़ के बाग एवं पश्चिमी द्वीप समूह में गन्ना एवं केले के बाग विकसित किए।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- स्पेन एवं अमेरिकावासियों ने फिलीपाइंस में नारियल व गन्ने के बागान लगाए।
- इंडोनेशिया में एक समय गन्ने की कृषि में हॉलैंडवासियों (डचों) का एकाधिकार था।
- ब्राजील में अभी भी कुछ कॉफी वे बागान



जिन्हें फेज़ेंडा कहा जाता है यूरोपवासियों के नियंत्रण में है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

- मध्य अक्षांशों के आंतरिक अर्ध शुष्क प्रदेशों में इस प्रकार की कृषि की जाती है। इसकी मुख्य फसल गेहूँ है।



- यद्यपि अन्य फसलें जैसे मक्का, जौ, राई एवं जई भी बोई जाती है। इस कृषि में खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है एवं खेत जोतने से फसल काटने तक सभी कार्य यंत्रों द्वारा संपन्न किए जाते हैं।

66°30'

विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

23°30'

→ खेतों का आकार विस्तृत

→ तकनीकी उपयोग (+)

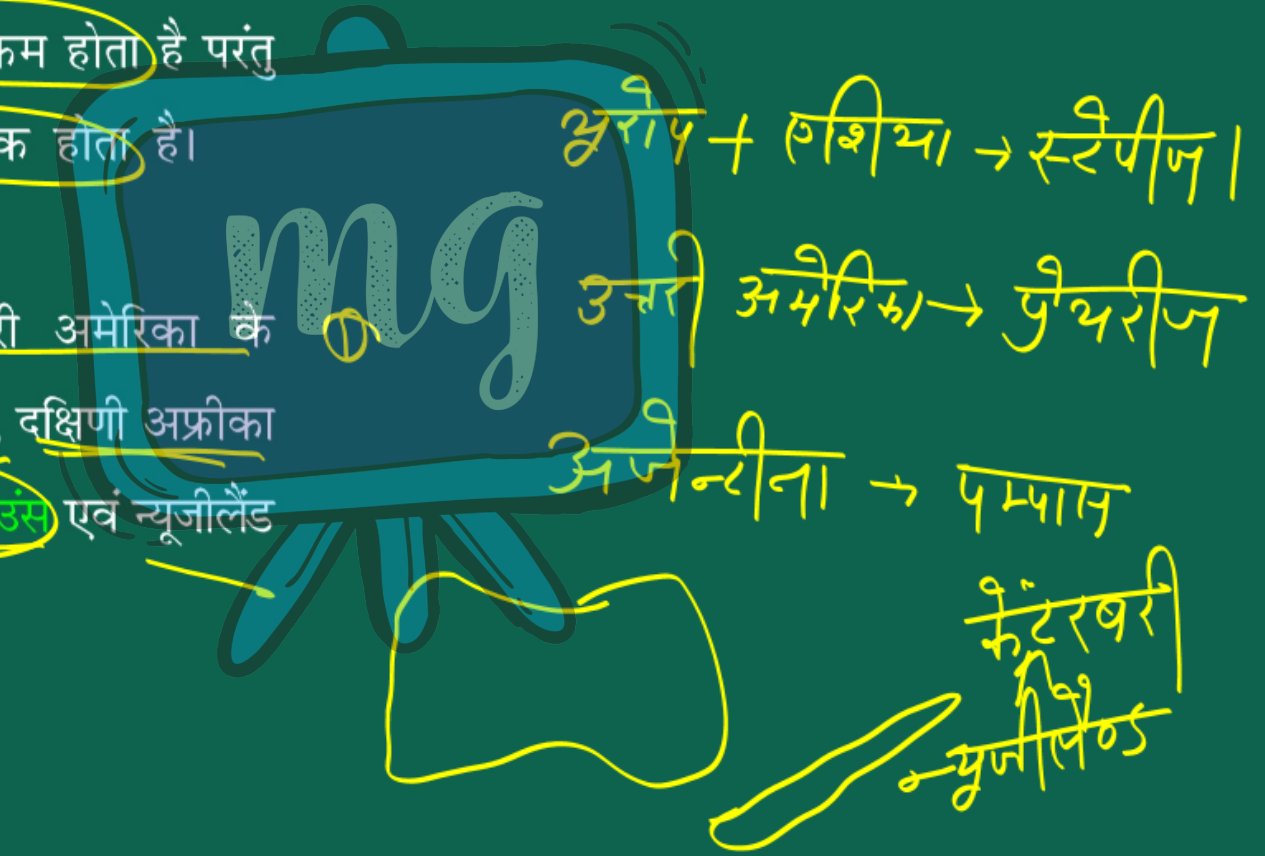
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इसमें प्रति एकड़ उत्पादन कम होता है परंतु प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है।

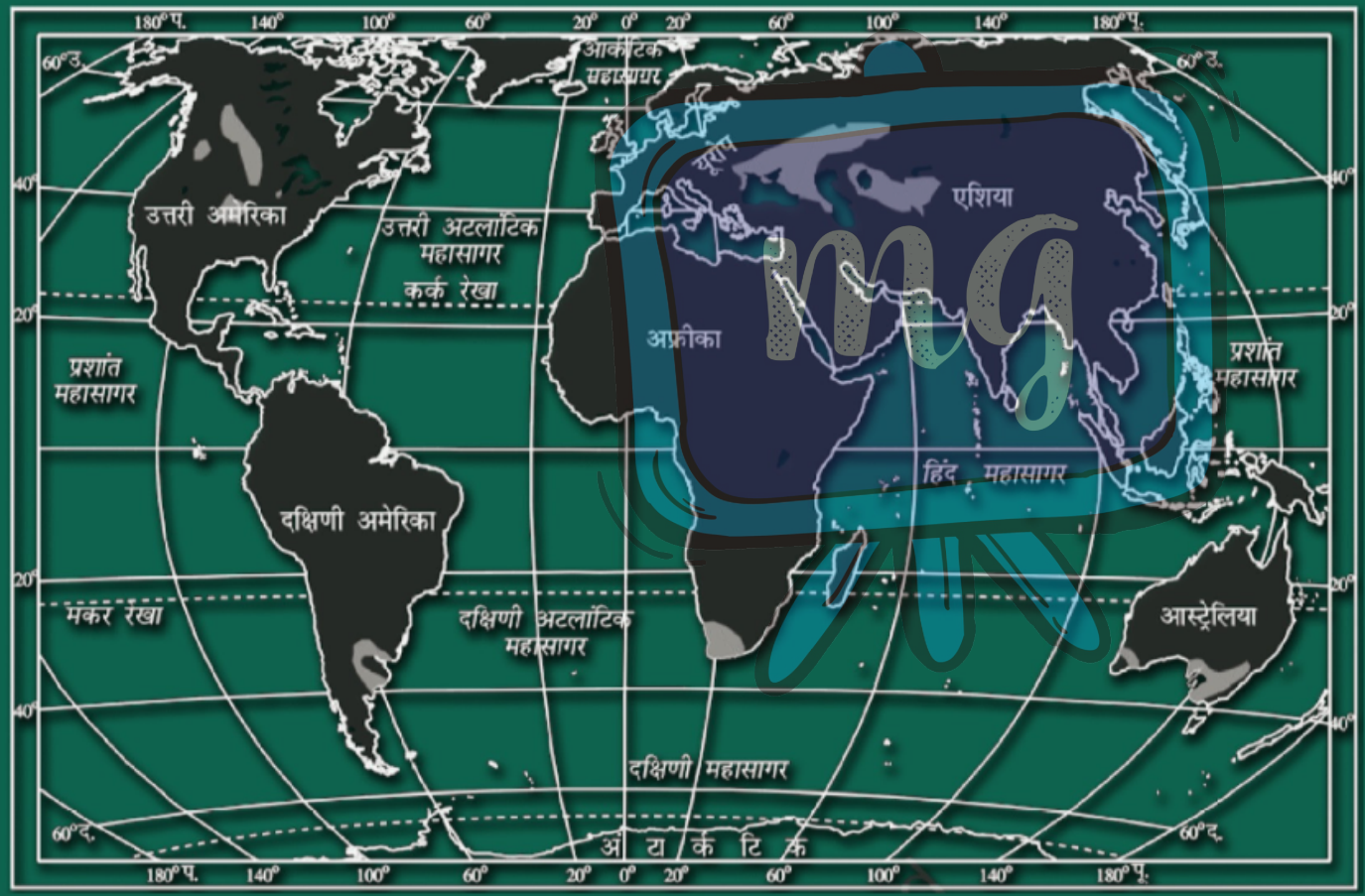
कृषि का क्षेत्र

- यूरेशिया के स्टेपीज, उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज, अर्जेंटाइना के पंपाज, दक्षिणी अफ्रीका के वेल्डस, आस्ट्रेलिया के डाउंस एवं न्यूजीलैंड के केंटरबरी के मैदान।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

मिश्रित कृषि



- इस प्रकार की कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में की जाती है।
- इस कृषि में खेतों का आकार मध्यम होता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इसमें बोई जाने वाली फसलें गेहूँ, जौ, राई, जई, मक्का, चारे की फसल एवं कंद-मूल प्रमुख हैं।
- चारे की फसलें मिश्रित कृषि के मुख्य घटक हैं।
- फसल उत्पादन एवं पशुपालन दोनों को इसमें समान महत्त्व दिया जाता है। फसलों के साथ पशुओं जैसे - मवेशी, भेड़, सुअर एवं कुक्कुर आय के मुख्य स्रोत हैं।